पाठ 1

दिसम्बर 28 - जनवरी 3

परमेश्वर सेंतमेंत प्रेम करता है (God Loves Freely)

सब्त दोपहर

इस सप्ताह के अध्ययन के लिए पढ़ें: निर्गमन 33:15-22; होशे 14:1-4; प्रकाशितवाक्य 4:11; यूहन्ना 17:24; मती 22:1-14; यूहन्ना 10:17, 18.

याद वचन : "मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उस पर से उतर गया है" (होशे 14:4)।

हालाँकि पतरस ने तीन बार यीशु का इन्कार किया था, जैसे कि यीशु ने भविष्यवाणी की थी (मत्ती 26:34), ये इन्कार कहानी का अंत नहीं थे। पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने पतरस से कहा, "क्या तू इनसे बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है?" उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु; तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" उसने उससे कहा, "मेरे मेमनों को चरा," उसने फिर दूसरी बार उससे कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" उसने उससे कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" उसने तीसरी बार उससे कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?" पतरस

* सब्त, जनवरी 4 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

उदास हुआ कि उसने उससे तीसरी बार ऐसा कहा, "क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?" और उससे कहा, "हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है; तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।" (यूहन्ना 21:15-17)। जिस प्रकार पतरस ने तीन बार यीशु का इन्कार किया था, उसी प्रकार यीशु ने - महत्वपूर्ण प्रश्न के माध्यम से, ''क्या तू मुझ से प्रेम करता है?'' - पतरस को तीन बार प्रश्न किया।

हमारी परिस्थितियाँ पतरस से कितनी भी भिन्न क्यों न हों, कई मायनों में सिद्धांत एक ही है। अर्थात्, जो प्रश्न यीशु ने पतरस से पूछा था वह वास्तव में वह अंतिम प्रश्न है जो परमेश्वर हमारे समय और स्थान में हममें से प्रत्येक से पूछता है: क्या तू मुझसे प्रेम करता है?

सब कुछ उस प्रश्न के हमारे उत्तर पर निर्भर करता है।

रविवार **दिसंबर 29**

उचित अपेक्षाओं से परे

परमेश्वर न केवल हमसे पूछता है, "क्या तू मुझसे प्रेम रखता है," बल्कि परमेश्वर स्वयं प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम करता है, और सेंतमेंत ऐसा करता है। वास्तव में, वह आपसे, मुझसे और हर दूसरे व्यक्ति से जितना हम कल्पना कर सकते हैं, उससे कहीं अधिक सेंतमेंत प्रेम करता है। और हम इस प्रेम को उस तरीके से जानते हैं जिस तरह से उसने अपने लोगों के इतिहास में कार्य किया है।

निर्गमन 33:15-22 पढ़ें और इन पदों के संदर्भ और उस कहानी पर विचार करें जिसमें वे प्रकट होते हैं। यह परिच्छेद, विशेषकर पद 19, परमेश्वर की इच्छा और प्रेम के बारे में क्या प्रकट करता है?

सब खोया हुआ लग रहा था। मिस्र की दासता से परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की आश्चर्यजनक मुक्ति के कुछ ही समय बाद, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था और एक सुनहरे बछड़े की पूजा की थी। जब मूसा पहाड़ से नीचे आया, तो उसने देखा कि उन्होंने क्या किया है,

और उसने दस आज्ञाओं वाली तख्तियों को नीचे फेंक दिया और उन्हें तोड़ दिया। हालाँकि लोगों ने उन वाचा संबंधी तमाम विशेषाधिकारों और आशीर्वादों का अधिकार खो दिया था जो परमेश्वर ने उन्हें मुफ्त प्रदान किया था, वाचा आशीर्वाद पाने की उनकी अयोग्यता के बावजूद परमेश्वर ने सेंतमेंत उनके साथ वाचा संबंध में बने रहने का विकल्प चुना।

निर्गमन 33:19 में लिखा है, "जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चाहूँ, उसी पर दया करूँगा," का अर्थ अक्सर गलत समझा जाता है कि परमेश्वर मनमाने ढंग से दयालु होना चुनता है और कुछ के प्रति दयालु, परंतु दूसरों के प्रति नहीं। हालाँकि, इस संदर्भ में परमेश्वर यह नहीं कह रहा है कि वह मनमाने ढंग से कुछ लोगों के प्रति प्रेमी और दयालु होगा और दूसरों के प्रति नहीं। परमेश्वर ऐसे काम नहीं करता है, यह कुछ लोकप्रिय धर्मशास्त्रों के विपरीत है जिसमें परमेश्वर कुछ लोगों को खो जाने और शाश्वत निंदा का सामना करने के लिए पूर्वनिर्धारित करता है।

तब परमेश्वर यहाँ पर क्या घोषणा कर रहा है? निश्चित रूप से परमेश्वर यह घोषणा कर रहा है कि, सभी के सृष्टिकर्ता के रूप में उसके पास सबसे अयोग्य लोगों को भी मुफ्त अनुग्रह और करुणा प्रदान करने का अधिकार है। और वह इस स्थिति में सुनहरे बछड़े की उपासना के तौर पर विद्रोह के बाद भी अपने लोगों, इस्राएल को दया दिखा कर ऐसा कर रहा है, भले ही वे इसके लायक नहीं थे।

यह कई उदाहरणों में से एक है जहाँ पर परमेश्वर अपने प्रेम को प्रकट करता है और ऐसा किसी भी उचित अपेक्षा से परे करता है। निश्चित रूप से यह हम सभी के लिए अच्छी खबर है !

किन तरीकों से, किसी भी उचित अपेक्षाओं के वगैर, परमेश्वर ने आप पर अपना प्रेम प्रकट करना जारी रखा है ?

सोमवार **दिसंबर 30**

एकतरफा प्रेम

पतित मानवता के प्रति परमेश्वर के प्रेम का अद्‌भुत उदाहरण होशे की कहानी में मिलता है। परमेश्वर ने भविष्यवक्ता होशे को आज्ञा दी,

"जाकर एक वेश्या को अपनी पत्नी बना ले, और उसके कुकर्म के बच्चों को अपने बच्चे कर ले, क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे चलना छोड़कर वेश्या का सा बहुत काम करता है" (होशे 1:2)। इस्राएल की बेवफाई और आध्यात्मिक वेश्यावृत्ति के बावजूद, होशे और उसकी बेवफा पत्नी को अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का एक जीवित वस्तु - सबक बनना था। अर्थात्, यह उन लोगों को परमेश्वर द्वारा मुफ्त दिये गये प्रेम की कहानी है जो इसके योग्य नहीं हैं।

वास्तव में, परमेश्वर की निष्ठा और प्रेम के बावजूद, लोगों ने बार-बार उसके विरुद्ध विद्रोह किया। तदनुसार, पवित्रशास्त्र बार-बार परमेश्वर को एक बेवफा जीवनसाथी के एकतरफा प्रेमी के रूप में वर्णित करता है। उसने अपने लोगों से पूरी तरह और ईमानदारी से प्रेम किया था, लेकिन उन्होंने उसका तिरस्कार किया और अन्य देवताओं की सेवा और पूजा की, जिससे उसे गहरा दु:ख हुआ और रिश्ते को तोड़ दिया, जो मरम्मत से परे प्रतीत होता था।

होशे 14:1-4 पढ़ें। ये पद अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के दृढ़ प्रेम के बारे में क्या प्रकट करते हैं?

_____

_____

अपने लोगों द्वारा बार-बार विद्रोह के बाद, परमेश्वर घोषणा करता है: "मैं उनके भटकाव को ठीक कर दूंगा, मैं उनसे सेंतमेंत प्रेम करूंगा"। वाक्यांश में "सेंतमेंत" शब्द "मैं उन्हें सेंतमेंत प्रेम करूंगा" एक हिब्रू शब्द (नेदाबाह) का अनुवाद करता है, जिसका अर्थ है कि जो स्वेच्छा से पेश किया जाता है। यह वही शब्द है जिसका उपयोग स्वर्गीय पवित्रस्थान की सेवकाई में मुफ्त बलिदान के लिए किया जाता है।

होशे की पूरी किताब में, और पवित्रशास्त्र की संपूर्ण कहानियों में, परमेश्वर अपने लोगों के प्रति अद्भुत प्रतिबद्धता और करुणा दिखाता है। भले ही वे बार-बार अन्य प्रेमियों के पीछे पड़ गए, वाचा रिश्ते को तोड़ दिया, जो मरम्मत (पुनर्बहाल) से परे प्रतीत होता था, परमेश्वर ने अपनी मुफ्त इच्छा से उन्हें अपना प्रेम देना जारी रखा। लोग परमेश्वर के प्रेम के पात्र नहीं थे; उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया था और इस पर किसी भी

उचित दावे को खो दिया था। फिर भी, परमेश्वर ने बिना किसी दबाव, नैतिक या अन्य दबाव के, उन्हें प्रेम करना जारी रखा। यहाँ और अन्यत्र, पवित्रशास्त्र लगातार परमेश्वर के प्रेम को स्वतंत्र और स्वैच्छिक के रूप में प्रदर्शित करता है।

बहुत से लोग परमेश्वर को एक दूर का और कठोर शासक और न्यायाधीश मानते हैं। एक बेवफा जीवनसाथी के एकतरफा प्रेमी के रूप में परमेश्वर का तिरस्कार और दु:खी होने की कल्पना आपको परमेश्वर को अलग तरह से देखने में कैसे मदद करती है? यह परमेश्वर के साथ आपके संबंध को देखने के तरीके को कैसे बदलता है?

मंगलवार **दिसंबर 31**

प्रेम सेंतमेंत दिया गया

निरंतर विद्रोह के बावजूद, परमेश्वर ने न केवल इस्राएल पर अपना प्रेम मुफ्त प्रदान करना जारी रखा, बल्कि हम पापी होते हुए भी, परमेश्वर ने हमें भी सेंतमेंत प्रेम करना जारी रखा। हम परमेश्वर के प्रेम के योग्य नहीं हैं, और हम इसे कभी अर्जित नहीं कर सकते। इसके विपरीत, परमेश्वर को हमारी आवश्यकता नहीं है। बाइबल के परमेश्वर को किसी चीज की आवश्यकता नहीं है (प्रेरितों 17:25)। आपके लिए, मेरे लिए और सभी व्यक्तियों के लिए परमेश्वर का प्रेम पूरी तरह से उसकी अपनी इच्छा से है।

प्रकाशितवाक्य 4:11 और भजन 33:6 की तुलना करें। ये पद हमें सृष्टि के संबंध में परमेश्वर की स्वतंत्रता के बारे में क्या बताते हैं?

_____

_____

परमेश्वर ने स्वतंत्र रूप से इस संसार की रचना की। और इस कारण, परमेश्वर सभी महिमा, सम्मान और अधिकार के योग्य है। परमेश्वर को कोई संसार बनाने की आवश्यकता नहीं थी। संसार की स्थापना से पहले, परमेश्वर ने पहले से ही ईश्वरत्व के भीतर मौजूद प्रेम संबंध का आनंद लिया था।

यूहन्ना 17:24 पढ़ें। यह हमें संसार के अस्तित्व में आने से पहले परमेश्वर के प्रेम के बारे में क्या बताता है?

परमेश्वर को अपने प्रेम की वस्तु के रूप में प्राणियों की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन, अपने प्रेमी चरित्र के अनुसार, परमेश्वर ने संसार की सृष्टि करने और प्राणियों के साथ प्रेम संबंध बनाने का फैसला किया।

न केवल परमेश्वर ने अपने उदार प्रेम के उपहार के रूप में इस संसार को स्वतंत्र रूप से बनाया, बल्कि अदन में मनुष्य के पाप में गिरने के बाद भी, और हमारे व्यक्तिगत रूप से पाप करने के बाद भी, परमेश्वर ने मनुष्यों से मुफ्त प्रेम करना जारी रखा है।

अदन में पतन के बाद, आदम और हव्वा को जीवित रहने और परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं था। लेकिन परमेश्वर, जो "अपनी सामर्थ्य के वचन से सभी चीजों को संभालता है" (इब्रा. 1:3), अपने महान प्रेम, दया और अनुग्रह से उनके जीवन को बनाए रखा और मानवता को प्रेम में वापस लाने का एक रास्ता बनाया है। और उस मेल-मिलाप में हम भी शामिल हैं।

यह तथ्य कि परमेश्वर इस संसार में इसके पतन और बुराई के बावजूद प्रेम करना जारी रखता है, हमें उसके प्रेम और चरित्र के बारे में क्या बताता है? इस सत्य के कारण हमें बदले में उससे प्रेम कैसे करना चाहिए?

बुधवार **जनवरी 1**

बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं

परमेश्वर न केवल अपनी स्वतंत्र इच्छा से लोगों से प्रेम करता है, बल्कि बदले में वह उन्हें स्वयं से प्रेम करने के लिए आमंत्रित भी करता है। परमेश्वर उन्हें स्वतंत्र रूप से यह चुनने की क्षमता देता है कि वे परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करेंगे या अस्वीकार करेंगे, यह (अन्य स्थानों के अलावा) मसीह के विवाह भोज के दृष्टांत में स्पष्ट है।

मत्ती 22:1-14 पढ़ें। इस दृष्टांत का अर्थ क्या है?

मसीह के विवाह भोज के दृष्टांत में, एक राजा अपने बेटे के लिए विवाह की व्यवस्था करता है और अपने नौकरों को "उन लोगों को बुलाने के लिए" भेजता है, जिन्हें विवाह में आमंत्रित किया गया था।

"वे आने को तैयार नहीं थे" (मत्ती 22:2, 3)। राजा ने एक से अधिक बार अपने सेवकों को उन्हें बुलाने के लिए भेजा, लेकिन उन्होंने उसके आमंत्रण को अनसुना कर दिया और इससे भी बदतर, उसके सेवकों को पकड़ लिया और उन्हें मार डाला (मत्ती 22:4-6)।

बाद में, उन लोगों से निपटने के पश्चात जिन्होंने उसके कुछ सेवकों की हत्या कर दी थी, राजा ने अपने सेवकों से कहा, 'विवाह भोज तैयार है, लेकिन जिन लोगों को आमंत्रित किया गया था वे योग्य नहीं थे। इसलिये सड़कों पर जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, उन्हें ब्याह में बुलाओ" (मत्ती 22:8, 9)। शादी के भोज में शामिल होने के लिए राजा से शादी का परिधान प्राप्त करने की आवश्यकता को दर्शाते हुए एक व्यक्ति को बिना शादी के परिधान के उतार दिए जाने के एक और प्रकरण के बाद, यीशु ने इस दृष्टांत को गूढ़ लेकिन अत्यधिक सार्थक वाक्यांश के साथ समाप्त किया, "बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं" (मत्ती 22:14)।

इसका अर्थ क्या है? जो अंततः "चुने हुए" हैं, वे हैं जिन्होंने विवाह के लिए प्रभु का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। पूरे दृष्टांत में "कॉल" और "आमंत्रित" के लिए अनुवादित शब्द ग्रीक शब्द कालेओ (कॉल करना, आमंत्रित करना) है, और जो निर्धारित करता है कि अंततः "चुनाव" (एक्लेक्टोस) कौन है, क्या किसी ने स्वतंत्र रूप से निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

वास्तव में, परमेश्वर विवाह के भोज में सभी को बुलाता है (अर्थात् आमंत्रित करता है)। हालाँकि, हममें से कोई भी परमेश्वर के प्रेम को अस्वीकार कर सकता है। प्रेम के लिए आजादी जरूरी है। परमेश्वर कभी भी अपना प्रेम किसी पर थोपेगा नहीं। दुख की बात है कि हम परमेश्वर के साथ प्रेम संबंध रखने से इनकार कर सकते हैं।

"चुने गए" वे हैं जो निमंत्रण स्वीकार करते हैं जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए परमेश्वर ने हमारी कल्पना से कहीं अधिक

अद्‌भुत चीजें तैयार की हैं। एक बार फिर, यह सब प्रेम और सिर्फ प्रेम में निहित स्वतंत्रता के सवाल पर आ जाता है।

आपका जीवन क्या प्रकट करता है कि आपने शादी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है और उचित कपड़े पहनकर आए हैं?

गुरुवार **जनवरी 2**

हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया

परमेश्वर हर किसी को अपने साथ प्रेम संबंध में आमंत्रित करता है, लेकिन केवल वे ही जो निमंत्रण को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करते हैं, शाश्वत परिणाम का आनंद लेते हैं। जैसा कि विवाह भोज के दृष्टांत में देखा गया, राजा ने उनमें से कई लोगों को कहा जो "आने को तैयार नहीं" थे, (मत्ती 22:3)।

तदनुसार, क्रूस पर चढ़ने से कुछ समय पहले, मसीह ने विलाप किया था: "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुमने न चाहा!" (मत्ती 23:37)। मसीह उन्हें इकट्ठा करना चाहता था, लेकिन वे तैयार नहीं थे। वही सामान्य यूनानी क्रिया जिसका अर्थ है "इच्छा करना" (थेलो) का उपयोग मसीह द्वारा उन्हें बचाने की इच्छा रखने और उनके बचाए जाने के इच्छुक न होने दोनों के लिए किया जाता है (और यही शब्द ऊपर मती 22:3 में भी है)।

फिर भी, मसीह इन लोगों के लिए और हमारे लिए क्रूस पर चढ़ा। क्या ही अद्‌भुत प्रेम! जबकि मानव पाप मृत्यु के योग्य है, ईश्वर ने स्वयं (मसीह में) कीमत चुकाई है और स्वर्ग और पृथ्वी के बीच टूटे हुए रिश्ते को सुधारने का एक तरीका बनाया है। इस बीच, वह हमें अपना प्रेम देना जारी रखता है, हालाँकि ऐसा करने के लिए वह अपनी स्वतंत्र प्रतिबद्धता से परे किसी भी दायित्व के अधीन नहीं है।

यूहन्ना 10:17, 18 पढ़ें। गलातियों 2:20 से तुलना करें। इन पदों में हमारे लिए क्या संदेश है?

ईश्वर के प्रेम के अंतिम प्रदर्शन – क्रूस में, हम देखते हैं कि मसीह ने अपनी सेंतमेंत इच्छा से स्वयं को हमारे लिए दे दिया। मसीह ने अपनी "स्वयं की पहल" से अपना जीवन दे दिया। किसी ने उस से उसका प्राण नहीं छीना; संसार की स्थापना से पहले स्वर्ग में सहमत उद्धार की योजना के अनुसार, उसने इसे सेंतमेंत पेश किया।

"हमारे उद्धार की योजना कोई बाद का विचार नहीं था, न ही आदम के पतन के बाद तैयार की गई एक योजना थी। यह 'उस रहस्य का प्रकाशन था जिसे अनंत काल से मौन रखा गया था।' रोमियों 16:25. यह उन सिद्धांतों का खुलासा था जो अनंत काल से परमेश्वर के सिंहासन की नींव रहे हैं। शुरुआत से ही, परमेश्वर और ख्रीष्ट शैतान के धर्मत्याग और धर्मत्यागी की भ्रामक शक्ति के माध्यम से मनुष्य के पतन के बारे में जानते थे। परमेश्वर ने यह नहीं चाहा कि पाप का अस्तित्व होना चाहिए, लेकिन उसने इसके अस्तित्व को पहले ही देख लिया था, और भयानक एवं आपात स्थिति से निपटने के लिए प्रावधान तय किया था। संसार के प्रति उसका प्रेम इतना महान था, कि उसने अपने एकलौते पुत्र को देने की वाचा बाँधी, 'ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, वरन अनन्त जीवन पाए।' – एलेन जी. व्हाइट, द डिजायर ऑफ एजेस, पे. 22.

शुक्रवार **जनवरी 3**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी व्हाइट, क्राइस्ट्स ऑब्जेक्ट लेसन्स में "टू मीट द ब्राइडग्रूम," पीपी. 405-421 पढ़ें ।

"यह परमेश्वर के प्रति गलतफहमी का अंधकार है जो दुनिया में छाया हुआ है। मनुष्य उसके चरित्र के बारे में अपना ज्ञान खो रहे हैं। इसे गलत समझा गया और गलत व्याख्या की गई।' इस समय परमेश्वर का एक संदेश घोषित किया जाना है, एक ऐसा संदेश जो अपने प्रभाव में प्रकाश डालता है और अपनी शक्ति को बचाता है। उनके किरदार को जगजाहिर करना है। दुनिया के अंधेरे में उसकी महिमा का प्रकाश, उसकी अच्छाई, दया और सच्चाई का प्रकाश डालना है।

"यह वह कार्य है जिसे भविष्यवक्ता यशायाह ने इन शब्दों में रेखांकित किया है, 'हे यरूशलेम को शुभ समाचार सुनाने वाली, बहुत ऊँचे शब्द से सुना, ऊंचे शब्द से सुना, मत डर; यहूदा के नगरों से कह, "अपने

परमेश्वर को देखो!" देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ्य दिखाता हुआ आ रहा है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा; देखो, जो मजदूरी देने की है वह उसके हाथ में है।' 40:9, 10.

"जो लोग दूल्हे के आने की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हें लोगों से कहना है, 'अपने परमेश्वर को देखो।' दयालु प्रकाश की अंतिम किरणें, दुनिया को दिया जाने वाला दया का अंतिम संदेश, उसके प्रेम के चरित्र का प्रकाशन है। परमेश्वर के बच्चों को उसकी महिमा प्रकट करनी है। उन्हें अपने जीवन और चरित्र में यह प्रकट करना है कि परमेश्वर की कृपा ने उनके लिए क्या किया है।

"धार्मिकता के सूर्य का प्रकाश अच्छे कार्यों में - सत्य के शब्दों और पवित्रता के कार्यों में चमकना है।" - एलेन जी. व्हाइट, क्राइस्ट्स ऑब्जेक्ट लेसन्स, पृष्ठ 415, 416।

चर्चागत प्रश्न:

1. परमेश्वर के न होने के विचार से भी बुरा यह विचार होगा कि परमेश्वर हमसे नफरत करता है। अगर यह सच होता तो हम कितनी अलग दुनिया में होते?
2. आपको क्या लगता है कि आज हमारी दुनिया में परमेश्वर के चरित्र के बारे में इतनी गलतफहमियाँ क्यों हैं? उन तरीकों के बारे में सोचें और चर्चा करें जिनसे आप लोगों को परमेश्वर के प्रेम के चरित्र को अधिक स्पष्ट रूप से देखने में मदद कर सकें।
3. वह कौन सा संदेश है जो आज परमेश्वर के चरित्र के बारे में घोषित किया जाना है? आप इस संदेश को किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे समझाएँगे जो पहले से ही परमेश्वर के प्रेम की वास्तविकता से परिचित नहीं है? आप कौन सा सबूत बता सकते हैं जो उसके प्रेम और उसके अद्भुत चरित्र की वास्तविकता को दर्शाता है?
4. परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात करना एक बात है। हमारे जीवन में उस प्रेम को प्रकट करना और प्रतिबिंबित करना दूसरी बात है। कौन से "पवित्रता के कार्य" के द्वारा हमारे आस-पास के लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को प्रकट कर सकते हैं?